Airo International Research Journal
Volume I, ISSN: 2320-3714
Impact Factor 0.75 to 3.19

June, 2013

भारतीय स्त्री शिक्षा एवं समस्यायेः एतिहासिक एवं वर्तमान परिपेक्ष में

- **Sarita Arya, Research Scholar, CMJ University, Meghalaya**
- **Dr. Deepak Kumar, *HOD, Department of Education, Gochar Mahavidyalaya, Rampur Maniharan, Saharanpur (UP)***

भारतीय परम्परा में स्त्री को सदैव ही सम्मानजनक स्थान दिया जाता रहा है। उसे देवी, माँ या सहचरी कहकर पुकारा जाता रहा है, परन्तु इसके बावजूद भी उसे सदियों तक विद्या की देवी सरस्वती की पूजा करने से विमुख रखा गया। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में – महिलाओं को सदैव असहायता तथा दूसरों पर दासवत निर्भरता का प्रशिक्षण दिया गया। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन तथा मध्यकालीन समाज में स्त्रियों को अज्ञानता के आवरण में रखकर पिता, पति या पुत्र के दासत्व को स्वीकार करने के कर्तव्य का ज्ञान देने को ही उस समय की स्त्री शिक्षा की इतिश्री समझा जाता था, परन्तु आज परिस्थितियां बदल गयी है। आज स्त्रियां शिक्षा प्राप्त करके समाज के महत्वपूर्ण कार्यों में पुरूषों के साथ योगदान कर रही है। वे आज घर की चारदीवारी के अन्दर घुटकर भाग्य के भरोसे बैठी, यन्त्रवत कार्य करने वाली अनपढ कठपुतली मात्र ही नहीं है। वरन वे अज्ञानता के कारण से बहार आकर तथा ज्ञान के आलोक में परिपूर्ण होकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों से स्पर्धा करने के लिये तत्पर है वास्तव में आज स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गये है। स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन का श्रेय स्त्री शिक्षा के प्रसार तथा प्रचार की है। स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी तथा वर्तमान में इसकी स्थिति तथा समस्याये क्या है? इन्ही बातों का अध्ययन हम इस शोधपत्र में करेंगे।

अध्ययन का महत्वः–

शायद शिक्षा एक अत्यधिक महत्वपूर्ण जीवन अवसर होता है जो जिन्दगी में विभिन्न सुअवसरों के द्वारों को खोलता है। यह महत्ता और विकास का एक यंत्र होता है इसलिए ही यह सच्चे, स्वतंत्र, अनुभव एवपं स्वतंत्रता की प्रक्रिया भी होती है। भारतीय सन्दर्भ में जातिवाद, लिंग, धर्म, क्षेत्रवाद की प्रक्रिया भी होती है। भारतीय सन्दर्भ में जातिवाद, लिंग, धर्म, क्षेत्रवाद भाषा आदि पर असंख्य भेद–भावों से मुक्त है। **सुकरात के अनुसार– ''जिस व्यक्ति को सच्चा ज्ञान है, वह सदगुणी के सिवा और कुछ नहीं हो सकता''** अधिकांश शिक्षित व्यक्ति कम पक्षपाती होता है, अधिक खुले दिल का मनुष्य आवश्यता के समय में अपनी धारणाओं पर अडा रहने में कम भयभीत होता है। दूसरों की तरह ही वह खुद अपनी मांगों या इच्छाओं के प्रति अधिक खरा होता है, उसको ऐसा ही होना चाहिए। सच्ची शिक्षा व्यक्ति को मानवीय गुण प्रदान करने वाली होनी चाहिए।

जॉन डीवीः– '' शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, वरन्
जीवन यापन की प्रक्रिया है।''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. स्त्री शिक्षा की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. स्त्री शिक्षा के विकास हेतु किये जाने वाले प्रयासों का अध्ययन करना।
3. स्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विसंगतियों का अध्ययन करना।
4. स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में होने वाले भेदभावों का अध्ययन करना।
5. स्त्री शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन का सीमांकनः–

किसी भी शोध कार्य की पूर्णता के लिए किसी एक व्यक्ति से प्राप्त परिणामों को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। इसके लिए अध्ययन विस्तृत समूह पर किया जाना चाहिए, किन्तु विस्तृत समूह या सार्वभौम का अध्ययन एक जटिल कार्य है। अतः समाज से कुछ ऐसी इकाइयों को चुन लेते है जो समूचे इकाई का प्रतिनिधित्व करें।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए दो महाविद्यालयों आई.पी. कॉलेज, बुलन्दशहर तथा डी.ए.वी. कॉलेज बुलन्दशहर के स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं को चुना गया है।

अतः यह शोध कार्य आई.पी. कॉलेज बुलन्दशहर तथा डी.ए.वी. कॉलेज बुलन्दशहर तक ही सीमित है।

प्रयुक्त शोध उपकरणः–

प्रत्येक और सभी प्रकार के अध्ययन के लिए हमें निश्चित प्रकार के शोध उपकरण की आवश्यकता होती है जो नये क्षेत्र के वास्तविक तथ्यों को एकत्र करने मे सक्षम होते है। इन उपकरणों को उसी प्रकार ' टूल ' कहा जाता है जिस प्रकार श्रमिक अपने उपकरणों को 'टूल' कहकर पुकारता है। शैक्षिक अध्ययनों में विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता हैं विभिन्न प्रकार के शोध उपकरणों का प्रयोग आंकडों को एकत्र कर उनहें परिभाषित करने के लिए किया जाता है।

प्रत्येक उपकरण आंकडों को एकत्र करने के लिए एक निश्चित माध्यम होता है। सफल अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि उपयुक्त शोध उपकरण का चयन किया जाऐं। विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की सूचनाऐं एकत्र करने के लिए अनेक प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते है एक ही अधिक उपकरणों का प्रयोग शोधार्थियों द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने स्वयं निर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया है।

प्रयुक्त संख्यिकीय प्रविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकडों के विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु प्रतिशत विश्लेषण प्रविधि का उपयोग किया गया है।

स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति समय के साथ–साथ उतार–चढावों से परिपूर्ण रही है। सभी युगो में नारी की स्थिति एक जैसी नहीं रही है। हमारी प्राचीन व्यवस्था में नारियों को उच्च स्थान प्राप्त था। उन्हे सुख, वैभव, शांति, शक्ति व ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। इतिहास साक्षी है कि मैत्रेयी, गार्गी अनुसुइया जैसी विदुषियों ने विद्वानों को भी परास्त कर दिया। सीता सावित्री व शकुन्तला को महिला रतन माना जाता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि इस काल में महिलाओं को शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त था। बौद्धकाल में महिलाओं की स्थिति गौरवमय थी। गौतम बुद्ध महिला शिक्षा को पुरूष समाज के विकास के लिए रूपान्तरित धुरी मानते थे। इस काल के अवसान में बौद्ध धर्म और महिला शिक्षा ईसा से 200 वर्ष पूर्व के युग में सहायक सिद्ध हुआ और उसकी छत्र छाया में बहुत सी भिक्षणियां कवयित्री हुई। पांचवी शताब्दी से पूर्व बौद्धधर्म ने महिला शिक्षा की स्थिति को सुदृढ बनाने में सराहनीय कार्य किया।

आठवी शताब्दी के प्रारम्भ से भारत पर मुस्लिम आक्रमणों से यहां मुगल शासन की नीव पडी और 1707 तक औरगंजेब के पतन तक लगभग 500 वर्ष तक के काल में शिक्षा व्यवस्था में काफी परिवर्तन आया। इस काल में कट्‌टर पर्दा प्रथा होने से स्त्रियों को शिक्षा व्यवस्था नहीं थी। इस काल में महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था घरो तथा मस्जिदों तक सीमित थी। शाही घराने तथा अमीरों की लडकियां अपने घरों में ही शिक्षा प्राप्त करती थी।

भारत में ब्रिटिश शासन की जड तो सन् 1600 ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के साथ ही पनपनी आरम्भ हो गयी। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने महिला शिक्षा की आवश्यक न समझ कर उसकी ओर कदापि ध्यान नहीं दिया। उसका कारण यह था कि उसे अपने प्रशासकीय एवं व्यवस्तथिक रूप में कार्यालयों के लिय शिक्षित महिलओं की आवश्यकता नहीं थी। फलस्वरूप महिला शिक्षा की विशेष व्यवस्था न हो पायी। विलियम्स एडक्स लडको की शिक्षा के हितेषी थे तथा स्त्री वर्ग को अन्धकार के अज्ञान में धकेला जाता था।

सन् 1854 में सर्वप्रथम बुड घोषणा पत्र के द्वारा स्त्री शिक्षा के विकास के लिए धनी वर्ग से दान रूप में राशि लेने पर भी बल दिया। वास्तविक रूप में महिला शिक्षा की प्रगति सन् 1902 के पश्चात हुई। सन् 1904 में श्रीमती बेसेन्ट के प्रयत्नों द्वारा हिन्दू गर्ल्स स्कूल की स्थापना बनारस मे की गयी। सन् 1916 में प्रथम मैडिकल कॉलिज केवल लडकियों के लिए खोला गया। अतः सन् 1917 से 1947 तक स्त्री शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ। इसी समय में नारियों ने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। यातनायें सही तथा जेल भी गयी। इसी समय में भारतीय महिला संगठन तथा राष्ट्रीय महिला परिषद की स्थापना की।

वर्तमान में स्त्री शिक्षा की स्थितिः–

सन् 1947 में जन भारत ने स्वाधीनता प्राप्त की तो यह महसूस किया जाने लगा कि उच्च शिक्षा में व्याप्त कमियों को दूर करके शब्द की आवश्यकता के अनुरूप उच्च शिक्षा का पुर्नगठन करना अत्यन्त आवश्यक है। अर्न्त विश्वविद्यालय परिषद तथा केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद ने भी तत्कालीन विश्वविद्यालयी शिक्षा की स्थिति पर विचार किया तथा एक प्रस्ताव पारित किया कि भारत सरकार भारतीय विश्वविद्यालयों का मार्गदर्शन करने के लिये एक ऐसा आयोग गठित करे जो देश की वर्तमान तथा भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालयी शिक्षा में सुधार लाने तथा इसका विकास करने क लिये सुझाव प्रस्तुत करे। इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने 4 नवम्बर 1948 को डा0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा का गठन किया। इस आयोग ने स्त्री शिक्षा का विकास करने की सिफारिश की तथा कहा कि ''लडकियों के लिये गृह विज्ञान, अर्थशास्त्र, नर्सिंग व ललित कला जैसे विषयों की शिक्षा व्यवस्था की जानी चाहिए। सन् 1948 की शिक्षा योजना के क्रियान्वयन की जांच के लिए आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में मार्च 1952 में एक '' माध्यमिक शिक्षा पुर्नगठन समिति'' का गठन किया गया। इस समिति को आचार्य नरेन्द्र देव समिति द्वितीय के नाम से जाना जाता है।

सन् 1952–53 के माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुद्रा लियर आयोग) का गठन किया गया है। इस आयोग ने कन्या विद्यालयों तथा हस शिक्षा स्कूलों में गृहविज्ञान, शिक्षा की विशेष सुविधाये उपलब्ध कराने का सुझाव दिया।

श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में 1958 में दुर्गाबाई देशमुख समिति का गठन किया गया। इसका उद्‌देश्य प्राथमिक, माध्यमिक व प्रौढ शिक्षा स्तर पर स्त्री शिक्षा के विकास के लिए सुझाव दिया।

1 नवम्बर 1961 को राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा परिषद की अध्यक्ष श्रीमती द्राक्षा सरन ने शिक्षा मंत्रालय के परामर्श से श्रीमती हंसा मेहता की अध्यक्षता के एक समिति का गठन किया। जिसे हंसा मेहता समिति के नाम से जाना जाता है। इस समिति ने लडके व लडकियों की शिक्षा के समान अवसर की शिफारिश की केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत 1959 में राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी थी। इसमें स्त्री शिक्षा के विकास हेतु शोध कार्यों विचार विमर्श, गोष्ठियां, सम्मेलन आदि के आयोजन पर बल दिया।

14 जुलाई 1964 में भारत सरकार ने दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग के गठन की घोषणा की गयी।

स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय समिति की स्थापना सन् 1971 में की गयी। इस समिति की सिफारिश के अनुसार भारत सरकार स्त्री शिक्षा की उन्नति एवं विकास के लिए समुचित धनराशि का प्रबन्ध करे।

स्त्री शिक्षा के विकास की कडी में संसार के सभी देशों द्वारा 1975 को अर्न्तराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया गया।

1997 में रस्तौगी समिति ने अनुभव किया कि कार्यरत महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है। इसलिए इन महिलाओं के लिए विशिष्ट सुविधाओं की सिफारिश की गयी।

स्त्री शिक्षा के मार्ग में बाधायेः–

यद्यपि आज का युग विज्ञान का युग है। तथा विज्ञान के अनेक रूढिवादी विचारों, अन्धविश्वासों तथा दोषपूर्ण रीति रिवाजों की उपयोगिता को सप्रमाण नकार दिया है, परन्तु फिर भी अनेक भारतीय अब भी इन रूढियों, अंधविश्वासों तथा परम्पराओं का पोषण एवं समर्थन करते है। यही कारण है कि हमारे देश में लडकियों की शिक्षा के प्रति अभी भी सीमित, संकुचित, रूढिवादी विचार पाये जाते है।

इन्ही परम्पराओं के कारण स्त्री के कार्य क्षेत्र को घर तक सीमित रखना उचित मानकर उसकी शिक्षा का विरोध किया जाता है। उनके विचार में लडकियां शिक्षा प्राप्त करके समानता की मांग करती है जो स्त्री चरित्र–हीनता का सूचक है ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार की समस्या ओर अधिक उग्र प्रतीत होती है। वास्तव में यह एक अत्यन्त गम्भीर समस्या है, जिसके कारण अनेक स्त्रियां अनपढ रह जाती है अथवा कुछ वर्षों के अध्ययन के उपरान्त शिक्षा छोड देती है आज आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रकार के रूढिवादी व धार्मिक अन्धविश्वासों तथा परम्पराओं के प्रति जनमानस का दृष्टिकोण बदला जाये। इसके अतिरिक्त स्त्रियों को भी अपनी शिक्षा के प्रति उदासीनता की भावना का परित्याग करना होगा। जन आन्दोलन, प्रौढ शिक्षा का प्रसार नया जनसंचार के साधन इस दिशा में महत्वपूर्ण सहायता कर सकते है। स्त्री–शिक्षा की समस्या अभी भी देश में एक गम्भीर समस्या है। इस समस्या के समाधान के लिये हमें गम्भीर होकर मन्थन, चिन्तन करने की आवश्यकता है हमें आजादी प्राप्त हुए कई दशक बीत गये। लेकिन फिर भी हमें पूर्ण रूप से आजादी प्राप्त नहीं हुई है। यहां यह वाक्य इस बात की ओर संकेत करता है कि हमारे देश की आधी आबादी ''स्त्री'' अभी भी शिक्षा से वंचित है। बालिकाओं को शिक्षित किये बिना विकसित राष्ट्र की कल्पना भी कठिन है वैसे तो बालिका शिक्षा के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर प्रयास किये जा रहे है, परन्तु अपेक्षित परिणाम अभी तक नहीं मिल पा रहे है। अतः यह समस्या ज्यों की त्यों बनी है। अतः इस समस्या के समाधान के लिये सार्थक कदम उठाये जाने चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. पाठक पी.डी. (1974) : भारतीय शिक्षा तथा उसकी समस्याये, विनोद पुस्तक, मन्दिर आगरा।

2. अग्रवाल जे.सी. (1991) : भारतीय शिक्षा पद्धति, संरचना और समस्याये, आर्य बुक डिपो दिल्ली।

3. वर्मा, जी एस. (2001) : आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्याये, रायल बुक डिपो, मेरठ।
4. गोयल, तरूण (2008) : सामान्य ज्ञान, अरिहन्त पब्लिकेशन, इंडिया, मेरठ।